वेदनि जा महावाक, सुतह लखाइन समता,
समुझी थिया सामी चए, महबती मुश्ताक,
चढ़िया चेतन चिट ते, सटे सभि संग साक,
परचिया रहनि पाक, पाणु विञाए पाण में.

अपने काव्य द्वारा वेदों की व्याख्या करने वाले महाकवि सामी कहते हैं कि वेदों के 'महावाक्य' स्वयं ही समता दिखाते हैं। यह बात समझ कर वे जन प्रेम से परिपूर्ण हो गये, जिन के हृदय में प्रभु के दर्शन करने की अत्यंत इच्छा थी। ऐसे प्रेमीजन संसार के सभी संबंध/रिश्तेदारी तोड़कर विश्व के आत्म-चैतन्य से व्याप्त आकाश पर चढ़ गये, चिदाकाश से एकरूप हो गये। उन्होंने अपने अंदर ही झाँक कर परमात्मा को देख लिया और फिर शुद्ध एवं पवित्र होकर प्रियतम परमात्मा से मिलकर संतोष और आनंद का अनुभव कर लिया।

जिस वाक्य में जीव और ब्रह्म की एकता बतायी गयी है, उसे '**महावाक्य**' कहते हैं अद्वैत वेदांत उपनिषदों के कुछ वाक्यों को 'महावाक्य' की संज्ञान दी गयी है। इन महावाक्यों में निहित अर्थ समझे बिना वेदांत का बोध नहीं हो सकता। जीव-ब्रह्म की एकता या समता का ज्ञान/बोध होने के लिए चार वेदों के चार महावाक्य इस प्रकार हैं-

(1) ऋग्वेद में - '**प्रज्ञानं ब्रह्म**' अर्थात् आत्मज्ञान, सर्वोच्च ज्ञान।

(2) यजर्वेद में - '**अहं ब्रह्मास्मि**' अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ।

(3) सामवेद में - '**तत्वमसि**' अर्थात् 'वह (ब्रह्म) तुम ही हो।

(4) अथर्ववेद में -'**अयात्मा ब्रह्म**' अर्थात् वह (तुम्हारी) आत्मा ब्रह्म है।

इन महावाक्यों में इंद्रियों द्वारा ज्ञान प्राप्त करने वाले जीव और विश्व के हर स्थान पर उपस्थित ईश्वर, हृदय में निवास करने वाले ईश्वर एवं सर्वव्यापक/सर्वेश्वर की समता बतायी गयी है।

वेदों के इन महावाक्यों में अध्यात्म और परमार्थ के उपदेश का सार अवश्य आ गया है किन्तु सामी साहब कहते हैं कि महावाक्यों का मात्र जप/जाप करने से ही अविद्या/अज्ञान का अंधकार दूर नहीं हो सकेगा। महावाक्यों में निहित अर्थ की साक्षात् अनुभूति या ज्ञान होना भी आत्मकल्याण के अत्यंत आवश्यक है। इन महावाक्यों की सफलता साधक के एकता/समता या समाधि के अनुभव प्राप्त होने में है। 'ब्रह्म मैं ही हूँ अथवा मैं ही वह ब्रह्म हूँ।' का स्वरूप अनुभव होना ही समाधि, समता या एकता है।

■